IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 8, March 2024

वस्त्र ननमाि्ण में जैनवक कपास की भूनमका

श्रीमती शुभम गुप्ता
Student, Mansarovar Global University, Bhopal

प्रस्तावनादृ

जैविक कप कपास क्या है? जैविक खेती प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर काम करती है। किसान अपनी फसले उगाने के लिए प्राकृतिक प्रणालियों और चक्र का भरपूर उपयोग करते हैं ।फसल चक्र जैविक ।।खाद और कंपोजिट जैसी तकनीकों का उपयोग करने से स्वस्थ मिट्टी से स्वस्थ फसल प्राप्त होती हैं। जैविक खेती हमारे ग्रामीण परिवेश को और अधिक प्रकृति के अनुकूलन बनाने का एक शानदार तरीका हैं। हममे से बहुत से लोगों को यह एहसास नहीं हैं, कि हम जो पहनते हैं उसके जीवन की शुरुआत मिट्टी में ही हो जाती हैं। कपास को खेत में उगाया जाता हैं, उसके रेशे को चुना जाता हैं, फिर उसे धागे के अप में तैयार किया जाता हैं। इन धागों की सहायता से कपड़े व वस्त्रो का निर्माण होता हैं।

विभिन्न प्रकार के कपास उपलɶध हैं, यदि आप सुनिश्चित करना चाहते हैं, कि आप जो खरीद रहे हैं, वह वास्तव में टिकाऊ तरीके से उगाया जाता हैं? तो प्रमाणीत जैविक कपास सबसे अच्छा विकल्प हैं, ऑर्गेनिक अर्थात जैविक एकमात्र प्रणाली हैं, जो पर्यावरण से अत्यधिक विमाान पदार्थों को समाप्त करती हैं। अन्य रेशे जैविक खेतों में उगाए जा सकते हैं, जैसे लिनन, जूट, रेशम और ऊन आदि लेकिन कपास वेस्त्रों में सबसे अधिक उपयोग की जाने वाली सामग्रियों में से एक हैं।

भारत की प्रमुख फसल कपास ना केवल लाखों कृमाकों की आजीविका का स्रोत हैं। बल्कि यह औ4ोगिक गतिविधियों, रोजगार एवं निर्यात की ş्मिट से भी महत्वपूर्ण वस्त्र उ4ोग का प्रमुख प्राकृतिक रेशा हैं। पिछले कुछ वर्मों से शासन के कार्यक्रमों जैसी विशेमा योजनाओं के आरंभ होने से अपना भारत देश कपास उत्पादन में आत्मनिर्भर हो गया हैं। देश में कपास की पर्याप्त उपलɶधता होने से वस्त्र उ4ोगों को अंतररामट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धी बनाने में कपास की महत्वपूर्ण भूमिका हैं। इस प्रकार महत्वपूर्ण प्राकृतिक रेशे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष अप से लाखों लोगों के रोजगार का जरिया बन गया हैं। भारत सरकार द्वारा शुअ की गई जैविक कपास उत्पादन की विशेमा योजनाएं सराहनीय हैं।

शोध के उद्देश्य

जैविक कपास उत्पादन के निम्न प्रमुख उद्देश्य शामिल किए गए हैंदृ

पश्चिम निर्माण में जैविक कपास की कृमि उत्पादन की संभावना का अध्ययन करना।

जैविक कपास के उत्पादन का किस प्रकार अधिक लाभ प्राप्त किया जा सके का अध्ययन करना।

वस्त्र निर्माण में जैविक कपास की उपयोगिता का अध्ययन करना। भारतीय वस्त्र उ4ोग में जैविक कपास की भूमिकादृ

भारतीय वस्त्र उ4ोग जैविक कपास की कच्ची सामग्री का आधार तथा सशन वस्त्र निर्माण क्षमता के कारण विश्व के बड़े उ4ोगों में महत्वपूर्ण स्थान रखता हैं। जैविक कपड़े और वस्त्र चुनने से न केवल जलवायु को ही बल्कि मानव एवं प्रकृति को भी लाभ होता हैं। किसान जैविक फैसले उगाने के लिए प्राकृतिक तरीकों का उपयोग करते हैं ,जो स्वस्थ मिट्टी का निर्माण करते हैं। वह खतरनाक सिंथेटिक कीटनाशकों का उपयोग नहीं करते हैं। जिसका अर्थ हैं, कि किसान हमारे कपड़े बनाने के लिए अपने स्वास्थ्य को जोखिम में नहीं डाल रहे हैं। वस्त्र उ4ोग की पहचान इसके व्यापक विस्तार में हैं। जहां एक और गहन पूंजी वाले मिल उत्तम हैं, और दूसरी ओर सूक्ष्मकारीगरी वाले हस्त उ4ोग हैं। मिल क्षेत्र 50 मिलियन स्पिंडल्स और 8 लाख 42 हजार रोटर्स

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 8, March 2024

से अधिक की संस्थापित क्षमता वाली 3400 वस्त्र मिलो के साथ भारत का विश्व में दूसरा स्थान हैं। हथकर'ाा और छोटे स्तर की वि4तकर'ाा इकाई जैसे दृ परंपरागत क्षेत्र ग्रामीण एवं अर्द्ध शहरी क्षेत्र में लाखों लोगों के लिए रोजगार के सबसे बड़े स्रोत हैं।

जैविक कपास वस्त्र उ4ोग में एक टिकाऊ विकल्प हैं, जिसे निम्न बिंदुओं द्वारा समझाया गया हैंदृ 1. जलवायु परिवर्तन से मुकाबला करता हैदृ

जैविक किसान कपास उगाने के लिए प्राकृतिक तरीकों का उपयोग करते हैं, न कि जीवाश्म ईंधन आधारित उर्वरकों का किसान प्रकृति के साथ काम करके किसान स्वस्थ मिट्टी का निर्माण करते हैं।जो कार्बन का भंडारण करती हैं, और जलवायु परिवर्तन से निपटने में मदद करती हैं, जिससे स्वास्थ रेशे प्राप्त होते हैं, और जो वस्त्र निर्माण में एवं उपयोग में अधिक उपयोगी सिद्ध होते हैं।जिनका स्वास्थ्य पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता हैं।

बहुमूल्य जल की बचत एवं सुरक्षा करता हैंदृ

पारंपरिक अप से उत्पादित कपास की तुलना में जैविक कपास पानी के लिए बेहतर हैं। जैविक खेती से स्वस्थ मिट्टी बनती हैं, जो स्पंज की तरह कार्य करती हैं, जो बाढ़ के दौरान पानी को सोख लेती हैं, और सुखे के समय इसे लंबे समय तक रोक कर रखती हैं। जैविक खेती में खतरनाक सिंथेटिक किट नाशकों और उर्वरको पर प्रतिबंध हैं।

किसानों को उनके परिवार का भरण पोमाण करने में मदद करता हैंदृ

अपने खेतों में एक संतुलित प्रणाली बनाए रखने के लिए जैविक किसान हमेशा कपास के साथदृसाथ अन्य फसले भी उगते हैं। जो कृमाक परिवारों और उनके समुदायों को अधिक स्थिर सुलभ प्रचुर और विविध खा4 आपूर्ति आय का एक अन्य स्रोत प्रदान करता हैं।

खतरनाक सिंथेटिक कीटनाशकों को खत्म करता हैंदृ जैविक किसान कीटों और बीमारियों को नियंत्रित करने के लिए फसल चक्र जैसे प्राकृतिक तरीकों का उपयोग करते हैं गैर जैविक खेती में उपयोग किए जाने वाले खतरनाक सिंथेटिक कीटनाशक पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुंचा सकते हैं, जलमार्गों को जहरीला बना सकते हैं और उन श्रमिकों को खतरे में डाल सकते हैं जो हमेशा अपनी सुरक्षा के लिए आवश्यक सुरक्षा उपकरण नहीं खरीद सकते दुनिया भर में बेचे जाने वाले सभी किट नाशकों में से 16 प्रतिशत के लिए अकेले पारंपरिक कपास जिम्मेदार है ऑर्गेनिक का मतलब सिर्फ यह नहीं है कि कपास कैसे उगाई जाती है कारखाने में क्या होता है यह भी महत्वपूर्ण ह

ग्लोबल ऑर्गेनिक टेक्सटाइल स्टैंडर्ड जी ओ टी एस लोगो वाला ऑर्गेनिक कॉटन न केवल जैविक अप से उगाया जाता है बल्कि इसे सामाजिक और पर्यावरणीय अप से जिम्मेदार तरीके से भी निर्मित किया गया हैं।

वस्त्र निर्माण में जैविक कपास की महत्वपूर्ण भूमिका क्यों हैंदृ

हम जलवायु आपातकाल में हैं। दुनिया के दूसरे सबसे अधिक प्रदूमाण फैलाने वाले उ4ोग के अप में कपड़ा उ4ोग को तत्काल अपनी स्थिति सुधारने की जअरत हैं। जो फास्ट फैशन समस्या का एक बड़ा हिस्सा हैं। कपड़ों के साथदृसाथ 'ारेलू उपयोगी वेस्त्रो और व्यनिगत देखभाल उत्पादों के लिए जो कपड़े चुनते हैं। वह भी मायने रखता हैं। जैविक कपड़े और वस्त्र चुनने से न केवल जलवायु परिवर्तन से निपटने में मदद मिलती हैं। बल्कि मानव और प्रकृति को भी लाभ होता हैं।

जैविक फैशन और वस्त्र क्या हैं?

जैविक वस्त्र कपास के अलावा अन्य सामग्रियों से भी बनाए जा सकते हैं ,जैसे लिनन, ऊन, सिल्क आदि

यह रेशे उन फसलों या जानवरों से आते हैं। जो जैविक खेतों में उगाए या पाले जाते हैं। जैविक किसान अपनी फसले उगाने के लिए प्राकृतिक तरीकों का उपयोग करते हैं। जैविक खेती प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर काम करती हैं। किसान अपनी

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 8, March 2024

फसले उगाने के लिए प्राकृतिक प्रणालियों का प्रयोग करते हैं, जो स्वस्थ मिट्टी का निर्माण करते हैं, वह खतरनाक सिंथेटिक कीटनाशकों का उपयोग नहीं करते हैं, जिसका अर्थ हैं, कि किसान हमारे कपड़े बनाने के लिए अपने स्वास्थ्य को जोखिम में नहीं डाल रहे हैं। वस्त्र उ4ोग की पहचान इसके व्यापक विस्तार में हैं।

भारतीय सूती वस्त्र के संभावित स्वास्थ्य लाभदृ

कपास उत्पादन पर्यावरण संरक्षण के लिए लाभकारी होता हैं। कपास का रेशा प्राकृतिक रेशा हैं, कपास रेशे में आद्रता संतुलन के कारण शुद्ध कपास का रेशा आसपास के वातावरण से नमी को अवशोमित कर सकता हैं। जैविक कपास प्राकृतिक अप से शोमाण और आरामदायक होता हैं, इसलिए यह आरामदायक वेस्त्र के लिए एक आदर्श कपड़ा हैं। जो इसे पर्यावरण अनुकूल वस्त्र के लिए सबसे अच्छा विकल्प बनाता हैं। जैविक वस्त्र जिम्मेदार तरीके से बनाए जाते हैं। रासायनिक, सामाजिक और पर्यावरणीय Şमिट से प्रमाणित जैविक मानक यह सुनिश्चित करते हैं की प्रमाणित जैविक कपास उत्पादों में कोई एलर्जिक कार्सिनोजेनिक या विमाान रासायनिक अवशेमा नहीं होते हैं जब आप जैविक कपास का उपयोग वेस्टन के अप में चुनते हैं तो आप सुनिश्चित करते हैं कि आपके बच्चे इन हानिकारक पदार्थों के संपर्क से सुरक्षित है जैविक वस्त्र खरीदने का चयन करके आप दुनिया भर में मनुमयों जानवरों और प्राकृतिक संसाधनों के

स्वास्थ्य को बड़ा रहे हैं। प्रमाणीकरण लोगों की जांच करें

निमकर्मा

अतरू उपरोन तथ्यों के द्वारा यह ज्ञात होता है कि भारतीय वस्त्र उ4ोग का व्यापक क्षेत्र एक और हाथ से बने हुए क्षेत्र तथा दूसरी ओर पूंजी गहन मिल क्षेत्र तक फैला हुआ है इन सभी क्रियाकलापों में वि4ुत कारखा होजरी तथा मीटिंग क्षेत्र हद्कर'ाा और हस्तशिल्प क्षेत्र सहित मानव निर्मित फाइबर कपास रेशम उन जैसे फाइब्रो की विस्तृत श्रृंखला शामिल है वस्त्र विनिर्माण उत्पादन का 10रू भारत की सकल 'ारेलू उत्पाद में 2रू और भारत की निर्यात आई में 13रू का योगदान प्रदान करता है लगभग 45 मिलियन से अधिक लोगों को प्रत्यक्ष अप से रोजगार प्रदान करता है वस्त्र उ4ोग देश में रोजगार सृजन के सबसे बड़े स्रोतों में से एक है

शोध की समस्याएं

भारतीय सूती वस्त्र निर्माण की समस्या निम्नलिखित है

भारत में लगभग 30 से 40रू कपड़ों के उ4ोगों की दशा खराब है क्योंकि देश में अनेक कपड़े की मिल 'ाटे में चल रही है और इसे अप्रत्याशित उत्पादन एवं लाभ प्राप्त नहीं होता है

सूती वस्त्र के उ4ोग भारत के गुजरात में अधिक मात्रा में है लेकिन वहां कपास का उत्पादन कम है और हमारे निर्माण आंचल में कपास का उत्पादन अधिक है लेकिन वस्त्र उ4ोग नहीं के बराबर है जिसके कारण रोजगार की एवं अन्य समस्याएं उत्पन्न होती हैं

सूती वेस्टन उ4ोग में यह सबसे बड़ी समस्या है कि मिलन में काम करने वाले श्रमिकों द्वारा हड़ताल कामना करना तालाबंदी आदि क्रियाएं होने से उत्पादन प्रभावित होता है

सूती वस्त्र उ4ोग में कुछ अन्य समस्याएं जैसे वि4ुत आपूर्ति में बड़ा नईदृनई मशीनों का न होना रासायनिक पदार्थ की कमी दोमापूर्ण प्रबंधन और हथकर'ाा उ4ोग से प्रतिस्पर्धा आदि प्रमुख है

भारतीय सूती वस्त्र उ4ोग में बहुरामट्रीय कंपनियों से चुनौती मिल रही है शोध की सुझाव

सूती वस्त्र निर्माण उ4ोगी हेतु महत्वपूर्ण सुझाव

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 8, March 2024

सूती वस्त्र निर्माण उ4ोग के अंतर्गत बीमार मिलन का नवीनीकरण करना एवं आधुनिकरण करना आवश्यक है

भारत सरकार द्वारा करो जीएसटी एवं विभिन्न प्रकार के शुल्क जो लगाए जाते हैं उनमें छूट देना

एवं उनके प्रोत्साहन के लिए उचित वित्तीय व्यवस्था करनी चाहिए

सूती वस्त्र निर्माण उ4ोग में काम करने वाले श्रमिकों द्वारा हड़ताल ेराबंदी काम न करना तालाबंदी आदि की प्रवृत्तियों का प्रबंधकों को प्रभावी ढंग से सामना करना चाहिए

भारत में स्वचालित कार्गो का प्रतिशत विश्व में सबसे कम है इनको बढ़ाया जाना चाहिए

कपड़ों की गुणवत्ता में विशेमा सुधार होना चाहिए जिसमें किस्म का नियंत्रण हो ताकि भारत से अधिक मात्रा में विदेशों को निर्यात किया जा सके

उपरोन सुझावों के अलावा नएदृनए बाजारों की खोज करना और उ4ोग मालिकों का विदेश में भ्रमण करना लंबे रेश का जैविक कपास उत्पादन करना आदि उपाय के द्वारा सूती वस्त्र निर्माण उ4ोग की समस्याओं का समाधान हो सकता है

संदर्भ ग्रंथ सूची

पाटीदार संतोष कु मारए सदाबहार खेती ;जैविक खेती पर संपूर्ण जानकारी कृ षक जगत

एम पी नगर भोपाल जयपुर रायपुर तृतीय संस्करर् 2012

गौतम राकेश एिं भदोररया वजतेंद्र वसंहए मध्यप्रदे श एक पररचयए टाटा मेगरा वहल एजुके शन वलवमटेडए नयू वदल्ली

िषण

वसंह निल वकशोरए भारतीय अर्णशास्त्रए मध्यप्रदे श वहंदी ग्रंर् अकादमीए भोपाल एिषण